[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2841** **HC**

Unique Paper Code : 62051312

Name of the Course : **B.A. (Prog) C.B.C.S.**

Name of the Paper : Hindi-A

Semester : III

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

(इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।)

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 10×2=20

(क) जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे। मुंशी वंशीधर को यहाँ आए अभी छह महीने से अधिक न हुए थे लेकिन इस थोड़े समय में ही उन्होंने अपनी कार्यकुशलता और उत्तम आचार से अफसरों को मोहित कर लिया था। अफसर लोग उन पर बहुत विश्वास करने लगे। नमक के दफ्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थीं, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दरोगा जी किवाड़ बंद किए मीठी नींद सो रहे थे।

P.T.O.

अचानक आँख खुली तो नदी के प्रवाह की जगह गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया।

अथवा

मन की आशाएँ और उमंगें जैसे बढ़ती हैं, वैसे ही मेरा नेता भी बढ़ने लगा। थोड़ा बड़ा हुआ, तो गाँव के स्कूल में ही उसकी शिक्षा प्रारम्भ हुई। यद्यपि मैं इस प्रबंध से विशेष संतुष्ट नहीं थीं, पर स्वयं ही मैंने ऐसी परिस्थिति बना डाली थी कि इसके सिवाय कोई चारा नहीं था। धीरे-धीरे उसने मिडिल पास किया। यहाँ तक आते-आते उसने संसार के सभी महान व्यक्तियों की जीवनियाँ और क्रांतियों के इतिहास पढ़ डाले।

(ख) प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के मनुष्यों के हृदय का आदर्श रूप है। जो जाति जिस समय भाव से परिपूर्ण या परिलुप्त रहती है वे सब उसके भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से अच्छी तरह प्रगट हो सकते हैं। मनुष्य का मन जब शोक-संकुल, क्रोध से उद्दीप्त या किसी प्रकार की चिंता से दोचिंता रहता है तब उसकी मुखच्छवि तमसाच्छन्न, उदासीन और मलिन रहती है: उस समय कण्ठ से जो ध्वनि निकलती है वह भी या तो फुटही ढोल समान बेसुरी, बेताल या करूणापूर्ण तथा विकृत-स्वर संयुक्त होती हैं।

अथवा

उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वही उत्साह जो कर्त्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुंदर दिखाई पड़ता है, अकर्त्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाघ्य नहीं प्रतीत होता। आत्मरक्षा, पर-रक्षा, देश-रक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग दिखाई देती है उसके सौंदर्य को परपीड़न डकैती आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुंच सकता। यह बात होते हुए भी विशुद्ध उत्साह या साहस की प्रशंसा संसार में थोड़ी-बहुत होती ही है। अत्याचारियों या डाकुओं के शौर्य और साहस की कथाएँ भी लोग तारीफ करते हुए सुनते हैं।

2. हिन्दी उपन्यास के इतिहास पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

संस्मरण विधा पर प्रकाश डालिए।

3. 'पुरस्कार' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए। 12

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी की मूल संवेदना व्यक्त कीजिए।

P.T.O.

4. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं'? निबन्ध के आधार पर हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध शैली पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध में विद्यानिवास मिश्र ने किस समस्या को उजागर किया है

5. 'अंधेर नगरी' नाटक की संवेदना। 12

अथवा

'घीसा' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी कीजिए। 7

(क) प्रसादोत्तर युग के प्रमुख नाटककार

(ख) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का सामान्य परिचय।